समाजशास्त्र Paper-VII BA III (1) Social Pathology

14/5/20

भारत में सामाजिक विघटन

Social Disorganization in India

भारत में सामाजिक विघटन की समस्या को अनेक विद्वान केवल वर्तमान युग में उत्पन्न औद्योगीकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण तथा सामाजिक संस्थाओं के परिवर्तनों से जोड़कर देखा जाता है। यदि निष्पक्ष रूप से इस समस्या पर विचार किया जाये तो स्पष्ट होगा कि भारत में सामाजिक विघटन की प्रक्रिया का आरम्भ आज से लगभग 1,500 वर्ष पूर्व ही हो चुका था। धर्म के नाम पर उन ~~[illegible]~~ व्यवहारों को प्रोत्साहन दिया जाने लगा जिन्होंने हमारे समाज में शोषण वर्गसंघर्ष, पारस्परिक घृणा, अन्ध विश्वासों और वैमनस्य के बीज बो दिए। इस समय, परिवार, विवाह धार्मिक आचारों तथा स्त्रियों की स्थिति में तेजी से विघटनकारी तत्वों का प्रभाव बढ़ने लगा यद्यपि इन व्यवहारों को अपनी सांस्कृतिक विरासत मानकर कोई भी व्यक्ति इसे सामाजिक विघटन की दशा कहने का साहस नहीं कर सका। मध्यकालीन धर्म ने जिस तरह देवदासी प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह, विधवाओं के अमानवीय शोषण, पर्दा प्रथा, स्त्रियों के तिरस्कार, अस्पृश्यता, धार्मिक भिक्षावृत्ति, कर्मकाण्डीय प्रवृत्ति, धार्मिक अपराधी ~~[illegible]~~ तथा जाति-विभेद को प्रोत्साहन दिया, उसकी हानियाँ वर्तमान औद्योगीकरण तथा नगरीकरण से उत्पन्न दोषों की अपेक्षा हमारे लिए कहीं अधिक गम्भीर सिद्ध हुई। भारतीय समाज में यह सामाजिक विघटन का आरम्भ था, जिसे हम अपनी वर्तमान सामाजिक नागरिकता के बाद ही अनुभव कर सके।

भारत में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हमें एक विघटित, अर्थव्यवस्था, तथा, आन्दोलनों पर आधारित — राजनीति के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिला। शिक्षा के अभाव तथा पश्चिम के भौतिकवाद के प्रभाव से व्यक्तिगत स्वार्थों की अधिकाधिक पूर्ति को ही- स्वतन्त्रता का अर्थ समझे जाने लगा। इसके परिणामस्वरूप व्यवहार के परम्परागत तरीकों की अवहेलना की जाने लगी। नैतिक परिवर्तन का स्वागत करना जीवन का ढंग बन गया नैतिक व्यक्ति का उद्देश्य अधिक से अधिक धन का संचय करना हो गया, नैतिकता कि मानदण्ड बदलने लगे- तथा नई-नई मांगों एवम् जन आकांक्षाओं के कारण हमारी सामाजिक समस्याओं में गुणात्मक वृद्धि होने लगी। इन सभी परिस्थितियों के फलस्वरूप भारत में सामाजिक विघटन ने एक गम्भीर रूप धारण कर लिया।

भारत में सामाजिक विघटन की समस्याएँ

भारतीय सामाजिक जीवन का आज कोई भी पक्ष ऐसा नहीं बचा है जिसमे विघटनकारी तत्वों की समावेश न हुआ हो। आज न केवल व्यक्ति का जीवन विघटन की ओर बढ़ रहा है बल्कि हमारा परिवार तथा समाज भी टूट रहा है। हमारे सांस्कृतिक मूल्यों में स्वयं पतन की समस्या उत्पन्न हो गई है। इसके परिणामस्वरूप वैयक्तिक जीवन में जहाँ अपराध, श्वेतवसन अपराध, बाल अपराध, वेश्यावृत्ति, मद्यपान तथा आत्महत्या की समस्याएँ बढ़ रही हैं वही पारिवारिक जीवन में बच्चों के प्रति उदासीनता, स्त्रियों के शोषण, नये वैवाहिक मूल्यों विवाह-विच्छेद की बढ़ती हुई दर तथा दहेज के कारण विघटन का रूप अत्यधिक स्पष्ट होने लगा है। सामुदायिक जीवन का तो कोई भी पक्ष ऐसा नहीं बचा है जहाँ विघटन की दुर्गन्ध न आती हो। जातिवाद, अस्पृश्यता, भिक्षावृत्ति, सामाजिक कुरीतियाँ बेकारी, तथा निर्धनता पहले ही हमारे समाज को विघटित कर रही थी जबकि राजनैतिक, दलबन्दी, सार्वजनिक जीवन के भ्रष्टाचार असन्तुलित, औद्योगीकरण, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, भाषावाद, तथा युवा तनाव ने हमारे सम्पूर्ण सामाजिक जीवन को ही विषाक्त बना दिया। समाज में विघटन से सम्बन्धित समस्याओं की कोई निश्चित सूची बनाना भी आज असम्भव हो गया है।

→ सामाजिक विघटन की स्पष्ट अभिव्यक्तियाँ →

① वेश्यावृत्ति - (Prostitution) हमारे समाज में वेश्यावृत्ति की समस्या भी अत्यधिक गम्भीर रूप में धारण कर चुकी है कुछ समय पूर्व तक सार्वजनिक स्थानों पर वेश्यालयों का संचालन होता था, लेकिन सन् 1956 में स्त्रियों तथा कन्याओं का अनैतिक व्यापार निरोधक-अधिनियम पास हो जाने के बाद भी इस समस्या में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हो सका। अपहृत स्त्री बाड़ किया, तथा स्त्रियाँ कॉलगर्ल, कैबरे डान्सर तथा सोसाइटी गर्ल के रूप में अनैतिक कार्य के साथ अपराधी व्यवहारों में रुचि लेने लगी हैं। वेश्यावृत्ति चाहे किसी भी रूप में हो यह सामाजिक विघटन में वृद्धि करती है। वेश्याएँ अपने तरीके से ग्राहकों को इतना सम्मोहित कर लेती हैं कि फिर ऐसे व्यक्तियों का परिवार संगठित नहीं रह पाता, समाज में यौन रोगों का प्रसार के केन्द्र यही वेश्यालय होते हैं। वेश्यावृत्ति इतनी गम्भीर समस्या है कि सामाजिक विघटन का सबसे बड़ा कारण माना जाता है

→ मद्यपान-नशीले पदार्थों का सेवन →

हमारे समाज मे मद्यपान की समस्या अत्यधिक गम्भीर है। यह समस्या मुख्य रूप से आधुनिकता की अमर्यादित धारणा तथा निम्न वर्ग के आर्थिक तनावो से अधिक सम्बन्ध है। उच्च वर्ग के व्यक्ति मद्यपान को फैशन तथा प्रतिष्ठा का सूचक मानते है, जबकि श्रमिक वर्ग के व्यक्ति अनेक चिन्ताओ तथा निराशाओ से मुक्त होने के लिए इसे एक सहारे के रूप मे देखते है। मद्यपान स्वयं ही वेश्यावृत्ति, अनैतिकता व्यक्ति के विरुद्ध अपराधो, हिंसा, जुए और भ्रष्टाचार का प्रोत्साहन देता है। भारत मे 1980 के पश्चात् जिस प्रकार तेजी से शराब के ठेको और शराब की दुकानो की संख्या मे वृद्धि हुई उसके फलस्वरूप यहाँ युवा वर्ग पर इसका सबसे प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। आज स्थिति यह है कि युवा वर्ग इस बुराई का शिकार है। मद्यपान व्यक्ति की कार्य कुशलता को कम करके स्वास्थ्य के स्तर को गिराकर, मानसिक तनावो मे वृद्धि करके तथा नवीन आर्थिक कठिनाई करके समाज को विघटित कर रहा है।

→ भिक्षावृत्ति — Beggary — भारत मे इस समस्या का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि नवीनतम सूचनाओ के अनुसार भिखारियो की संख्या 80 लाख से भी कुछ अधिक है। इनमे वे व्यक्ति सम्मिलित नही है जो तीर्थ स्थानो मे धर्म के नाम पर यात्रियो को भिक्षा देने के लिए बाध्य करते है। यदि ऐसे व्यक्ति को सम्मिलित किया जाए तो यह संख्या 1 करोड़ से भी अधिक हो जाएगी। कोई व्यक्ति चाहे भीख माँगने के लिए बाध्य हो अथवा यह उसका पेशा हो लेकिन किसी समाज मे भिखारियो की संख्या जब इतनी अधिक हो तो इससे वहाँ की सामाजिक विघटन का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। किसी भी समाज मे भिक्षावृत्ति पर अंकुश न रहने पर बेचारे बच्चो का इसलिए अपहरण किया जाने लगता है कि उसे भीख माँगने का कार्य करवाया जा सके। इसके फलस्वरूप समाज मे ऐसे लाखो व्यक्तियो के भरण पोषण का भार आ जाता है जिससे जीवन मे मेहनत, सम्मान और समाज के नियमो का कोई मूल्य नही होता यह समस्या एक खोखले और जर्जर समाज की समस्या होती है।

→ निर्धनता — (Poverty) — निर्धनता केवल एक आर्थिक समस्या ही नही है बल्कि अपने दुष्परिणामो के दृष्टिकोण से यह एक गम्भीर सामाजिक समस्या है। भारत मे निर्धनता के कारण जनसंख्या के एक बहुत बड़े भाग को दो समय भरपेट भोजन भी प्राप्त नही होता

→ 4

अच्छा मकान, और साफ कपड़े मिलना तो एक बहुत दूर का सपना है। कई-2 नगरों में मैला प्रकार झुग्गी-झोपड़ी, चालों, खोलियों, और फुटपाथों पर लाखों-लोगों का जीवन नरक ही रहा है, उससे निर्धनता की समस्या का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है भूख से तड़पते हुए अपने बच्चों को देखकर व्यक्ति यदि चोरी, जालसाजी, तस्करी, और रहजनी जैसे अपराधों में पड़ जाए तो आश्चर्य नहीं होगा। यह समस्या बच्चों में भी प्रतिशोध और तनाव को प्रोत्साहन देकर उन्हें बाल अपराधी बनाती है। भारत में कितने ही व्यक्ति निर्धनता के कारण गुटखा मद्यपान और वेश्यावृत्ति की प्रवृत्ति हो रही है। जिनके माता-पिता की आय निर्धनता की सीमा रेखा से भी नीचे है। निर्धनता को दशा आत्महत्याओं का सबसे प्रमुख कारण है। इसके अतिरिक्त यह समस्या चरित्र के पतन तथा भिक्षावृत्ति को प्रोत्साहन देकर समाज को विघटित करती है।

→ बेरोजगारी - (Unemployment) — भारत में सामाजिक विघटन की एक अन्य अभिव्यक्ति बेरोजगारी के रूप में विद्यमान है। अधिकांश अनुमानों के अनुसार भारत में इस समय कार्य करने की कुशलता और इच्छा के बाद भी बेरोजगारों की संख्या 5 करोड़ है। इस समय तक बेरोजगारों, कार्यालय में संख्या चार करोड़ से अधिक है, वर्तमान स्थिति में यह स्थिति यह है कि उच्च शिक्षा प्राप्त विश्वविद्यालयों के लाखों स्नातक, इन्जीनियर तथा डाक्टर भी बेरोजगारी की समस्या के शिकार हैं। यह बहुत स्वाभाविक है कि कार्य की इच्छा अथवा शिक्षा के बाद भी युवकों को रोजगार नहीं मिल पाता तब पेट की भूख और निराशा की भावना उन्हें समाज विरोधी कार्य की ओर ले जाती है। बेरोजगारी की समस्या से नैतिक पतन तथा आत्महत्या की घटनाओं में ही वृद्धि नहीं होती बल्कि लाखों व्यक्तियों के जीवन में निराशा, कुण्ठा, हीनता तथा प्रतिरोध की भावना की जन्म दी जाने से भी समाज विघटित होने लगता है।

Prem-
Arun Kumar.
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College
SASARAM-